P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-7* March- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जम्मू क्षेत्र का पर्यटन एवं सांस्कृतिक परिदृश्य

अपर्णा श्रीवास्तव
असिस्टेंट प्रोफेसर (गेस्ट फेकल्टी इन कमर्शियल आर्ट)
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग, आगरा
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भारत की अतुलनीय सांस्कृतिक विरासत में जम्मू कश्मीर की सांस्कृतिक भूमि का गौरवपूर्ण इतिहास अद्वितीय है। समग्र विश्व में जम्मू कश्मीर की अतुलनीय पर्यटन संस्कृति की विशिष्टता इसे "पृथ्वी का स्वर्ग" तथा एड्वेन्चर टूरिज्म के रूप में प्रसिद्ध करती है। है। जम्मू कश्मीर की सांस्कृतिक विरासत धार्मिक दृष्टि से ही नहीं अपितु, ऐतिहासिक, प्राकृतिक, भौगोलिक एवं कलात्मक दृष्टि से भी भारत को विश्व का सिरमौर बनाती है। जम्मू राज्य अपनी नैसर्गिक प्राकृतिक सौन्दर्यात्मक स्थलों सहित प्राचीन मन्दिरों, मुबारक मंडी महल, प्राचीन किला, रामनगर जिला, ऊधमपुर, अमर महल, (पहाड़ी चित्रशैली का प्रमुख केन्द्र है, व जम्मू की ऐतिहासिक धरोहर का संग्रहालय बन गया है), पटनीटॉप, क्रिमची मन्दिर, बाहु किला, अखनूर का किला, मार्तंड सूर्य मन्दिर, अम्बारन, डल झील आदि प्राकृतिक एवं पुरातात्विक स्थलों हेतु विशेष प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में दो वृहद स्तर के प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ हैं– अमरनाथ गुफा (कश्मीर घाटी में स्थित) और वैष्णों देवी गुफा–जम्मू, प्रमुख हैं। यहाँ विश्व की प्रमुख धार्मिक संस्कृतियों का अनूठा संगम प्रत्यक्ष दर्शनीय है। विविध प्रकार के आभूषण एवं धार्मिक उत्सव और यहाँ के अद्वितीय मन्दिरों, भव्य भवनों, ऐतिहासिक दुर्गों, अद्भुत आभूषणों व टेक्सटाइल की सौन्दर्यपूर्ण वस्तुयें –जम्मू के कलाकारों के श्रम, कौशल, धैर्य एवं लग्न की उत्कृष्ट उदाहरण हैं। जम्मू के वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिक स्वरूपों में चित्रकला, वास्तुकला, शिल्पकला, लोककला, मेले, त्यौहार, रस्में, भाषायी संस्कृति इत्यादि सभी की गौरवपूर्ण गाथा भारत की अन्य क्षेत्रीय संस्कृतियों से इसे विशिष्टता प्रदान करती है। जिसे सद्भावना व सौहार्द्र के साथ मिलकर मनाया जाता है, जो जम्मू संस्कृति की धर्म निरपेक्षता को प्रमाणित करती है।

मुख्य शब्द : जम्मू क्षेत्र, सांस्कृतिक परिदृश्य, पर्यटन, पुरातात्विक व धार्मिक स्थल, भाषायी विवधता।

प्रस्तावना

भारत की अतुलनीय सांस्कृतिक विरासत में जम्मू कश्मीर की सांस्कृतिक भूमि का गौरवपूर्ण इतिहास अद्वितीय है। यहाँ विश्व की प्रमुख धार्मिक संस्कृतियों का अनूठा संगम प्रत्यक्ष दर्शनीय है। जम्मू कश्मीर की सांस्कृतिक विरासत धार्मिक दृष्टि से ही नहीं अपितु, ऐतिहासिक, प्राकृतिक, भौगोलिक एवं कलात्मक दृष्टि से भी भारत को विश्व का सिरमौर बनाती है। जम्मू के वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिक स्वरूपों में चित्रकला, वास्तुकला, शिल्पकला, लोककला, मेले, त्यौहार, रस्में, भाषायी संस्कृति इत्यादि सभी की गौरवपूर्ण गाथा भारत की अन्य क्षेत्रीय संस्कृतियों से इसे विशिष्टता प्रदान करती है।

विविध धर्मों की संगम स्थली जम्मू का उल्लेख पुराणों और धार्मिक गाथाओं के रूप हमें प्राचीन साहित्यिक उल्लेखों में वर्णित मिलता हैं। प्राचीन काल में एवं जम्मू कश्मीर संस्कृत भाषा का प्रमुख केन्द्र रहा है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि जम्मू तथा कश्मीर की सांस्कृतिक विरासत को पृथक करना चुनौतीपूर्ण कार्य है, जिसका प्रमुख कारण है– जम्मू कश्मीर में तीनों क्षेत्र (जम्मू, कश्मीर व लद्दाख) की धार्मिक संस्कृति का संगम अटूट हैं, जम्मू में सनातन, बौद्ध, ईस्माल व जैन मतों को विकसित होने का पूर्ण अवसर मिला है। आज के परिवेश में यह सांस्कृतिक रूप से साम्प्रदायिक सौहार्द्र व सद्भावना का अद्वितीय संगम प्रस्तुत करता है। इसीलिए यहाँ जनआकांक्षाओं और मान्यताओं का प्रस्फुटीकरण विभिन्न रूपों में हुआ है। जम्मू का प्रांगण विभिन्न राजवंशों के राजाओं की कर्मभूमि रही है, जिसके फलस्वरूप पुरातात्विक स्मारक और अवशेष विरासत में सभी विभिन्न समुदायों के मध्य सांस्कृतिक समन्वय का दर्पण कला संस्कृति के माध्यम से प्रत्यक्ष दर्शनीय है। जम्मू में लोक सामान्य के द्वारा सभी धर्मों के प्रति समान भाव है जिससे इस प्रदेश के धर्म निरपेक्ष होने का प्रमाण

मिलता है। जम्मू की यही धर्मनिरपेक्ष विशेषता का सम्बन्ध यहाँ पर निवास करने वाली विभिन्न जनजातीय संस्कृति के समन्वय को प्रदर्शित करती है। ये जनजातियां जम्मू की सांस्कृतिक विरासत को पोषित करती है। जम्मू राज्य विभिन्न जाति समूह तथा मिश्रित संस्कृतियों की भूमि है।

जम्मू का सुहावना स्वरूप उसे अपनी जलवायु, प्राकृतिक सुषमा तथा पहाड़ी भूमि के विस्तार, विभिन्न पर्वतों की श्रृंखला और तवी नदी के जल भण्डार आदि से प्राप्त हुआ है, जो स्वयं में अतुलनीय है। जम्मू की भौगोलिक संस्कृति में पीर पंजाल की पर्वत श्रृंखला जम्मू को कश्मीर घाटी से पृथक करती है, फलस्वरूप यहाँ कश्मीर से पृथक विभिन्न जनजातियाँ दृष्टिगोचर हो जाती हैं। इण्डो आर्यन कश्मीरी मुस्लिम तथा हिन्दू, कश्मीर घाटी में पीर पंजाल के उत्तर की ओर निवास करते हैं। बुद्ध, चम्पा तथा तुरानी जंस्कर श्रृंखला के उत्तर दिशा में एवं आर्यों की हिन्दू डोगरा जनजाति, लद्दाख, बाल्तिस्तान तथा गिलगित क्षेत्र में व मुसलमान, चिलभालिस, पहाड़ी गद्दी तथा मुस्लिम गुर्जर ये सभी पर्वती क्षेत्रों में पंजाल श्रृंखला के दक्षिण के मैदानों में निवास करती है।

यद्यपि जम्मू क्षेत्र की वर्तमान परिस्थितियों की जनसांख्यिकीय के अनुसार वहाँ विभिन्न जातीय संस्कृतियाँ दिखाई देती हैं, जिनमें मुस्लिम, सिक्ख, जैन(अल्पांश), हिन्दू(अधिकांश जम्मू शहर), बौद्ध(लद्दाख) सम्मिलित हैं। ये सभी जातियाँ विभिन्न उपजनजातियों में विभाजित हैं। ये सभी अधिकांशतः कृषि, शिल्प, उद्योगों पर निर्भर हैं। इन सभी जनजातियों का जनसंख्या घनत्व जम्मू के पहाड़ी क्षेत्रों में अधिक है। वर्तमान कुछ दशकों में जम्मू, ऊधमपुर, कठुआ, सांबा, अखनूर, राजौरी तथा पुंछ जिलों की जनसंख्या अधिक संगठित हुई है। जम्मू क्षेत्र की विभिन्नता के साथ ही यहाँ की जनसंख्या में भी विविधता के दर्शन होते हैं। इन सभी में विभिन्न जनजातियां व अनुसूचित जनजातियाँ भी निवास करती हैं जिनका विशेष महत्व है जिनमें– बाल्टी, बेदा, बोटो, ब्रोकपा, चेंगप्पा, गारा, मोन, गुर्जर, बकरवाल, गद्दी गिप्पी इत्यादि तथा अनुसूचित जनजातियों में बकरवाल, वशिष्ठ, चमार, डूम, मेघ, रताल, इत्यादि सभी में डोगरा (हिन्दू) जनजातियाँ सर्वप्रमुख हैं। इनमें ब्राह्मणों व राजपूतों का वर्चस्व स्पष्ट दर्शनीय है। इन सभी की जीवन पद्धति, सामाजिक मर्यादा, रीति रिवाज, विचार, रहन सहन विशिष्ट हैं।

इन सभी जनजातियों की सांस्कृतिक वेशभूषा में विविधता के दर्शन होते हैं यथा–विभिन्न प्रकार की पगड़ियाँ–पटका, कैप या स्कार्फ भी कहा जाता है, विविध प्रकार के उत्तरीय–कुर्ता, जामा(अंगरखा), जैकेट(फथुही), कमरबन्ध, अचकन, कोट, शॉल, धोती, लुंगी, पेन्ट इत्यादि तथा स्त्रियों में चोली, कुर्ता, पेशवाज, साड़ी, घाघरा, सुथाना(पैजामा) इत्यादि। विविध प्रकार के आभूषण एवं धार्मिक उत्सव और यहाँ की लोक कला आज भी देश विदेश के साहित्यकारों के लिए आश्चर्य का विषय है।

जम्मू की भाषा तथा लिपी

जम्मू में विभिन्न जनजातियों की विशिष्टता के पाये जाने का प्रमुख कारण यहाँ की भौगोलिक विशेषता का परिणाम है, फलस्वरूप जम्मू की भाषायी संस्कृति भी विभिन्नता से समृद्ध है। यह विभिन्न जातियाँ अपने विचारों के सम्प्रेषण हेतु लगभग 10 भाषाओं का प्रयोग करती हैं। यह भाषाएँ जम्मू में प्रयोग की जाती हैं। इन भाषाओं की कई उपभाषाएँ भी हैं। जहाँ हिन्दी, पंजाबी, डोगरी तथा संस्कृत भाषा का वर्चस्व हैं। जम्मू क्षेत्र में सैद्धान्तिक स्तर पर कश्मीरी, उर्दू, डोगरी, पहाड़ी, बाल्टी, लद्दाखी, गोजरी, शिना और पश्तो प्रमुख हैं। इसीलिए इन भाषायी संस्कृति को समझना अत्यन्त आवश्यक है। इस उद्देश्य हेतु इन भाषाओं को चार वर्गों में विभाजित किया गया है–

आर्यन

इसके अन्तर्गत जम्मू का दक्षिणी समूह आता है– जिसमें डोगरी, चिभाली, पहाड़ी, रामबानी, भद्रवाही, पहाड़ी, डोडा, किश्तवाड़ी तथा कश्मीरी भाषाओं का प्रयोग किया जाता है।

तुरानी

दक्षिणी समूह में इस भाषा का प्रयोग भी किया जाता है।

तिब्बती

इसके अन्तर्गत यहाँ बाल्तिस्तान तथा लद्दाख की भाषा चम्पा लोगों की भाषा जम्मू के ऐतिहासिक ग्रन्थों के लिपीबद्ध होने से कुछ शताब्दियों पूर्व यहाँ की अधिकारिक भाषा पर्शियन थी और सम्भवतः राजसी पत्राचार हेतु इस भाषा का उपयोग किया गया।

सन् 18वीं व 19वीं शताब्दी के ऐतिहासिक प्रसंगों में सन्दर्भित वर्णन के अनुसार, यह कहा जा सकता है कि पहाड़ी राजाओं का पत्राचार सम्बन्धों के प्रमाण हमें राजसी आदेशों में तथा सभी शाही पत्राचार पर्शियन शब्दों तथा भाषा के द्वारा प्राप्त होते हैं। इसके साथ ही कुछ राजपत्रों में डोगरी भाषा का उपयोग भी किया गया है। इन भाषाओं में चिभाली भाषा का सन्दर्भ ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं है। जम्मू के धार्मिक ग्रन्थों में शास्त्रीय अथवा देवनागरी भाषा का सदंर्भ वर्णित है। इस प्रकार जम्मू में पर्शीयन डोगरी तथा तिब्बती भाषा का प्रयोग किया जाता है।

यद्यपि सन् 20वीं तथा 21वीं शताब्दी में फारसी में लिखी गई उर्दू जम्मू की अधिकारिक भाषा है। इन भाषाओं के अतिरिक्त यहाँ जनमानस में हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा का उपयोग भी किया जाता है। इसके साथ ही जम्मू में विविध सामुदायिक संस्कृति के फलस्वरूप भाषायी विभिन्नता के साथ धार्मिक सांस्कृतिक समन्वय स्पष्ट दर्शनीय है। इस प्रदेश का साहित्य केवल वीररसात्मक ही नहीं रहा, अपितु इसमें भक्ति का श्रृंगार विषयक उच्चकोटि का काव्य तथा साहित्य भी उपलब्ध है। यहाँ का लोक साहित्य भी जगतप्रसिद्ध है क्योंकि वह भावपूर्ण एवं जीवन के आदर्शों के तत्वों से परिपूर्ण है।

जम्मू अपनी गौरवमयी परम्पराओं के लिए बहुचर्चित रहा है। इस धर्मभूमि ने शस्त्र तथा शास्त्रों की साधना तथा हिन्दू व मुस्लिम धर्म की एक साथ अराधना की है। यहाँ जम्मू कश्मीर का प्रत्येक स्थल एवं प्रत्येक क्षण देश के सीमारक्षकों की वीरता तथा त्याग की साक्षी है। यहाँ हिन्दू, मुस्लिम, बौद्ध, जैन आदि सभी धर्म गरिमा के साथ पल्लवित हुए हैं। विभिन्न धर्मों का केन्द्र होने पर भी जम्मू को हम एक सूत्र में बंधे हुए पाते हैं। सुप्रसिद्ध

तीर्थ वैष्णों यात्रा और मुस्लिम धर्म के विविध उत्सव को एक साथ मनाना इस स्थिति को स्पष्ट करते हैं।

जम्मू क्षेत्र भारत के इतिहास का अभिन्न अंग है। इस प्रदेश के कण–कण में ऐतिहासिकता के दर्शन होते हैं। इस क्षेत्र के नाम का उल्लेख महाभारत में भी मिलता है। जम्मू शहर से 32 किलोमीटर(20 मील) दूरस्थ अखनूर में पुरातात्विक खुदाई के पश्चात् इस जम्मू नगर के हड़प्पा सभ्यता से सम्बन्धित होने के साक्ष्य भी मिले हैं। जम्मू में मौर्य, कुषाण, कुशानशाह और गुप्त वंश काल के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। सन् 480 ई. के पश्चात् यहाँ काबुल, तैमूर, सिखों, मुगलों, देव वंश, ब्रिटिश इत्यादि तथा डोगरा शासकों ने इस भूमि पर शासन किया। देश की सीमाओं पर भिन्न–भिन्न आक्रमणकारियों से महायुद्धों में इस प्रदेश के वीरपुत्रों ने जम्मू क्षेत्र की वीर परम्परा को नये आयाम दिये हैं, जो स्वयं में उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

ब्रिटिश शासन से मुक्ति पाने के लिए और देशी रियासतों के साथ संघर्षकृत संकल्प, स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग और बलिदान इस भूमि पर जन्में डोगरा राजवंश के शासकों गुलाबसिंह, रनबीर सिंह के नेतृत्व में जाने कितने साहसी युवकों ने अपने प्राणों का त्याग किया। उन्नीसवीं शताब्दी की युग चेतना से जम्मू क्षेत्र अछुता नहीं रहा। डोगरा वंश के शासक हरि सिंह व डोगरा रेजीमेंट के नेतृत्व में स्वतंत्रता प्राप्ति का प्रकरण हमारे सांस्कृतिक इतिहास में एक उल्लेखनीय तथ्य है।

चित्रकला के क्षेत्र में जम्मू क्षेत्र का विशिष्ट स्थान रहा है, जिसमें समाज के सच्चे प्रतिबिम्ब और धर्म का विशेष प्रभाव रहा है, जो यहाँ की प्रमुख विशेषता रही है। धर्म, दर्शन, सामाजिक कथाएँ सभी पर चित्रकारों ने अपनी भावनात्मक अभिव्यक्ति चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत की है। जम्मू की बशौली चित्रशैली में पहाड़ी परिवेश को चित्रों में दर्शाया गया है, जिसमें लोककला के तत्वों का समन्वय स्पष्टतः दर्शनीय है, एवं लोक संस्कृति में इस क्षेत्र की जीवन शैली समन्वित है। जिसमें मानव जीवन की प्रत्येक क्रियाओं का वर्णन लोक गीतों में किया गया है। लोक संस्कृति में भारवां, कारकां, बारां इत्यादि व लोक नृत्यों में –भक्तियां, छज्जा, फुम्मानियाँ इत्यादि प्रमुख हैं। इस प्रदेश की शिल्प कला व मूर्तिकला अद्वितीय है। वास्तुकला का परिचय पाषाण युग से आरम्भ होता है। अद्वितीय मन्दिरों, भव्य भवनों, ऐतिहासिक दुर्गों, अद्भुत आभूषणों व टेक्सटाइल की सौन्दर्यपूर्ण वस्तुयें जम्मू के कलाकारों के श्रम, कौशल, धैर्य एवं लग्न की उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इसी के प्रतीक स्वरूप हैं–रामनगर का शाही महल, शीश महल, अमर महल पैलेस, बाहु का किला, विभिन्न प्रकार की उत्कृष्ट कालीनें, शॉल, इत्यादि। इस प्रदेश के वास्तुकारों का योगदान शिल्पशैली और अभिकल्पन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

यदि हम जम्मू की संस्कृति के लौकिक रूप को निहारना चाहें तो वह हमें इन सामाजिक व धार्मिक त्यौहारों, उत्सवों और रस्म रिवाजों में मिलेगा, जो गम्भीर एवं सार्वभौमिक सिद्धांतों पर आधारित हैं। भारतीय दर्शन, धर्म और संस्कृति का सच्चा स्वरूप हमें यहाँ पर मनाये जाने वाले विभिन्न स्वरूपों में देखा जा सकता है, जम्मू के विभिन्न सांस्कृतिक स्वरूपों में पुरमंडल मेला, रणबीरेश्वर मन्दिर मेला, शारदल देवी यात्रा, नरसिम्हा मन्दिर मेला, मेला पट, पीर खो गुफा, रक्षाबन्धन, शुद्ध महादेव मन्दिर मेला, वैशाखी, होली, दीवाली, दशहरा, महाशिवरात्रि, मकर संक्रान्ति, लोहड़ी, नवरात्रि, बाबा राह उर्स, पीर रोशनशाह वाली उर्स, बाबा बुद्ध अली शाह उर्स, पीर मठ उर्स, पीर शंहशाह वाली उर्स, मुहर्रम, ईद–ए–मिलाद, तथा बाराहवफात, ईद–उल–फितर या रमजान ईद, ईद–उल–जुहा या बकरीद और क्रिसमस इत्यादि क्षेत्रीय विभिन्न धर्मों के त्यौहारों व उत्सवों, मान्यताओं को सद्भावना व सौहार्द्र के साथ मिलकर मनाया जाता है, जिससे जम्मू संस्कृति में धर्म निरपेक्षता के होने का प्रमाण मिलता है।

जम्मू राज्य की पर्यटन संस्कृति

समग्र विश्व में जम्मू कश्मीर की अतुलनीय पर्यटन संस्कृति की विशिष्टता इसे "पृथ्वी का स्वर्ग" के नाम से सम्बोधित करती है। जम्मू कश्मीर की पर्यटन संस्कृति में जम्मू राज्य का विशेष स्थान है। जम्मू राज्य अपनी नैसर्गिक प्राकृतिक सौन्दर्यात्मक स्थलों सहित प्राचीन मन्दिरों, मुबारक मंडी महल, प्राचीन किला, रामनगर जिला, ऊधमपुर, अमर महल, (पहाड़ी चित्रशैली का प्रमुख केन्द्र है, व जम्मू की ऐतिहासिक धरोहर का संग्रहालय बन गया है) किलों आदि पुरातात्विक स्थलों हेतु विशेष प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में दो वृहद स्तर के प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ हैं– अमरनाथ गुफा(कश्मीर घाटी में स्थित) और वैष्णों देवी गुफा–जम्मू, जहाँ प्रतिवर्ष लाखों यात्री आते हैं। इन दोनों तीर्थों का मुख्य पड़ाव जम्मू है। इनके अतिरिक्त जम्मू की नैसर्गिक सुंदरता के कारण ये उत्तर भारत में एड्वेन्चर टूरिज्म के रूप में प्रसिद्ध रहा है। मर्सर, क्रिमिची, हरिहर मंदिर, बिलावर, जिला–कठुआ– परम्परा के अनुसार इस जगह का प्राचीन नाम बेलापुर, बिलावर या बिलापुर था। इस मंदिर का निर्माण काल 10वीं शताब्दी ईस्वी के लगभग माना जाता है, देवी भगवती मंदिर, थालोरा, जिला–ऊधमपुर–ये दोनों मंदिर सप्तरथ शैली में 10वीं शताब्दी में निर्मित किये गये हैं इत्यादि जम्मू के ऐतिहासिक मंदिरों में प्राचीन हिन्दू–वास्तुकला दृष्टिगोचर होती है। शीतकाल में जम्मू राज्य में सैलानियों की संख्या वृहद स्तर पर दर्शनीय है। जम्मू की भौगोलिक सांस्कृतिक विशेषता जम्मू क्षेत्र की पर्यटन संस्कृति को विशेष उपलब्धि प्रदान करती है, जिसका वर्णन इस प्रकार है–

रघुनाथ मन्दिर

जम्मू का रघुनाथ मन्दिर, सात शिखर युक्त मन्दिरों का समूह है, उनमें से एक विशाल मन्दिर उत्तर भारत में स्थित है। ये मन्दिर 1835–1860 ई. के समयावधि में महाराजा गुलाब सिंह और उनके पुत्र महाराजा रनबीर सिंह द्वारा निर्मित है। इस मन्दिर में अनेक देवी देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित हैं, लेकिन इन देवताओं के सभापति के रूप में भगवान राम को स्थापित किया गया है। यह मन्दिर पर्यटकों की आस्था का केन्द्र बना हुआ है।

बाहु किले का मेला

बाहु मेला रामनवमी के नाम से भी प्रसिद्ध है, जिसे वर्ष में नवरात्रों के अवसरों पर वैशाख व असुज

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-7* March- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

(मार्च–अप्रैल व सितम्बर–अक्टूबर) में मनाया जाता है। बाहु के ऐतिहासिक किले पर हजारों लोग एकत्रित होकर निकट ही काली माँ के मन्दिर पर आराधना करते हैं। इस किले से सम्पूर्ण जम्मू शहर दृष्टिगोचर होता है।

जम्मू

जम्मू राज्य के पर्यटन स्थलों में प्रसिद्ध कपूरगढ़ का किला, जम्मू के उत्तर पूर्व में एक ऊँचे पर्वत पर 18 किमी. दूर स्थित है। ये मन्दिर राजा कपूर देव द्वारा निर्मित है और वर्तमान के यह इस वंश का पैतृक निवास है। इसके साथ ही जम्मू क्षेत्र में अनेक पुरातात्विक किले हैं, जो पर्यटन का प्रमुख केन्द्र हैं।

पटनीटॉप

पटनीटॉप, यह स्थल जम्मू राज्य के ऊधमपुर जिले में स्थित एक हिल रिसोर्ट है। यहाँ देवदार के सघन जंगल, घुमावदार पहाड़ियाँ, विहंगम दृश्य और शांत वातावरण पटनीटॉप एक आदर्श पर्यटन केन्द्र है। इस क्षेत्र में मीठे जल के तीन स्त्रोत हैं, जिनमें औषधीय गुण विद्यमान हैं। पटनीटॉप, जम्मू से लगभग 100 किमी. सुदूर में स्थित है तथा ये पर्यटन का मुख्य अंग है।

पुरमंडल

इस पर्यटन स्थल को छोटा काशी भी कहा जाता है, जो जम्मू शहर से लगभग 35 किमी. दूर स्थित है। यह एक प्राचीन तीर्थ स्थल है। जहाँ शिव एवं अन्य देवीदेवताओं के अनेकों मन्दिर स्थित हैं।

चित्र सं.–1, श्री उमापति महादेव मन्दिर, पुरमंडल

शिवरात्रि के अवसर पर यहाँ तीन दिवसीय मेले का आयोजन किया जाता है, जिससे जम्मू शहर के पर्यटकों की अधिकांश जनसंख्या इसे दर्शनीय स्थल के रूप में स्थापित कर देती हैं।

वैष्णों देवी गुफा व यात्रा

भारत में शक्ति तीर्थों में सर्वाधिक प्रसिद्ध वैष्णों देवी गुफा यात्रा सुप्रसिद्ध है। जम्मू कटरा में त्रिकुटा पहाड़ियों से 1700 मीटर की ऊँचाई पर स्थित इस तीर्थ स्थल पर प्रत्येक वर्ष लाखों तीर्थ यात्री आते हैं। ये तीर्थ यात्रा सितम्बर से दिसम्बर माह में की जाती है। यह पवित्र गुफा 30 किमी. लम्बी व मात्र 1.5 मीटर ऊँची है। गुफा के अंत में माता के स्वरूप की प्रतीक तीन पिण्डियाँ स्थापित हैं, जो क्रमशः महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती देवी की प्रतीक हैं। ये तीनों ही मिलकर वैष्णों देवी के रूप में प्रसिद्ध हैं। गुफा में नीचे ही शीतल जलधारा निरंतर प्रवाहित होती हैं जिसे **चरणगंगा** कहा जाता है। यह प्रसिद्ध तीर्थ स्थल प्रत्येक वर्ष लाखों तीर्थ यात्रियों के आकषर्ण का मुख्य केन्द्र है। यहाँ अपनी मन्नत के पूर्ण होने की आशा करते हैं।

नंदिनी वन्य जीवन अभ्यारण्य

नंदिनी वन्य जीवन अभ्यारण्य तीतर एवं अन्य पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ घने जंगलों को घेरकर वन्य जीवन प्रजातियों को संरक्षण दिया जाता है। यह अपनी तीतरों व अन्य समान पक्षी प्रजातियों के लिए प्रसिद्ध है, जिनमें कुछ विशेष हैः– मैना, भारतीय मोर, ब्लू रॉक कबूतर, रेड जंगलफो, चीयर एजेंट और चकोर। अभ्यारण्य लगभग 34 किमी.^{2} में फैला है और यहाम पशुओं की भी अनेक प्रजातियाँ हैं। इन प्रजातियों में से जंगली जानवरों में तेंदुआ, जंगली सुअर, हेंमस बंदर और काला लंगूर इत्यादि सम्मिलित हैं। शीशमहल, डोगरा आर्ट गैलरी, इत्यादि कला संग्रहालयों में संग्रहित कला संस्कृतियां भी पर्यटन का प्रमुख केन्द्र हैं।

अखनूर का प्राचीन किला, जिला जम्मू

अखनूर का प्राचीन किला चिनाब नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। इस किले का निर्माण सन् 1762 ई. में मियां तेज सिंह द्वारा शुरू किया गया तथा सन् 1802 ई. में उनके उत्तराधिकारी राजा फिटकरी सिंह द्वारा पूर्ण कराया गया था और इस किले में नियमित अन्तराल पर बुर्ज है, मेहराबयुक्त महल तथा दुर्ग की दीवारें ऊँची हैं जो युद्ध जीतने में सहायक हैं। इस किले के महल भित्तिचित्रों से सुसज्जित हैं। अखनूर का किला सांस्कृतिक व ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। यहाँ हड़प्पा कालीन लाल और ग्रे आकृति द्वारा चिन्हित जार, तांबे की पिन, हड्डी की तीर, टेराकोटा का सिर, भित्तिचित्र, ऐतिहासिक मिट्टी के बर्तनों की उपस्थिति कुषाण कालीन वस्तुओं आदि का प्रतिनिधित्व करती हैं।

काला डेरा मंदिर–ऊधमपुर

यह मंदिर जिला ऊधमपुर में मनवाल में स्थित है एवं यहाँ एक ही नाम पर दो मंदिरों का निर्माण कराया गया है। इन दोनों मंदिरों का निर्माण 10–11वीं शताब्दी ई. के निकट माना जाता है। इसमें द्वितीय मंदिर सप्तरथ योजना पर निर्मित है। प्रथम मंदिर में गर्भग्रह के द्वार खम्भे धनुषाकार हैं व सबसे ऊपर प्रत्येक खम्भे में दो आले बने हुए हैं। गर्भग्रह और मंडप के बीच भी दो छोटे स्तंभ अड्डों में शामिल हैं, जिसमें एक पोर्च है। यह दोनों मंदिर नक्काशीदार अलंकरणों से सुसज्जित हैं।

ऊधमपुर जिले के रामनगर में पुराण महल (ओल्ड पैलेस), ऊधमपुर जिला– नवा महल, रामनगर

राजा सुचेत सिंह द्वारा निर्मित पुराण महल में नियमित अंतराल पर ऊँची दीवारों सहित तीन मंजिला एक जटिल संरचना है। इस महल के कमरे की दीवारें प्लास्टर द्वारा निर्मित हैं और फूलों की डिजाइन के साथ चित्रित हैं जिसमें लकड़ी की छत तथा छतों के कोने कमलाकृति में अलंकृत हैं, तथा नवा महल रामनगर, राजा रणबीर सिंह के पुत्र राजा राम सिंह द्वारा बनाया गया था। इस महल की आन्तरिक दीवारें पुष्पों से अलंकृत हैं।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-7* March- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

चित्र सं–2, रामनगर महल

शीशमहल, रामनगर, जिला–ऊधमपुर

इस प्राचीन महल के कोनों पर दो बुर्ज निर्मित हैं। इस महल के पीछे की तरफ महल में बीच में हॉल तथा कमरे निर्मित हैं जो प्रवेश द्वार सहित कमरों के साथ दीवान–ए–आम से सम्बद्ध हैं। प्रवेश द्वार के बाईं ओर क्रमशः दरबार हॉल, शीश महल और रंग महल है। इन सभी में पहाड़ी स्कूल के भित्तिचित्रों का प्रभाव दृष्टव्य है जिसमें रामायण, भागवत और अन्य पुराणों, युद्ध के दृश्य इत्यादि विषयों को चित्रित किया गया है। शीश महल की दीवारों पर शिकार व न्याय सम्बन्धी दृश्य, कृष्ण लीला के दृश्य, नायक तथा नायिका इत्यादि विषयों को एक पैनल के रूप में चित्रित किया गया है।

राजा सुचेत सिंह, रामनगर, जिला ऊधमपुर की रानी की समाधि

रानी समाधि की यह संरचना ऊँचे मंच पर स्थित है, सन् 1844 ई. में राजा सुचेत सिंह की मृत्यु के पश्चात् राजा रणबीर सिंह द्वारा निर्मित महल की छत गुम्बजाकार में हैं। समाधि के भीतर की दीवारें चित्रों से सुसज्जित हैं। प्रवेश द्वार के दोनों ओर कमरे निर्मित हैं, जिनमें आन्तरिक सज्जा साधारण है तथा सजावटी प्लास्टर के साथ सजाया गया है।

निःसंकोच जम्मू और कश्मीर राज्य प्रकृति से समृद्ध है। यह राज्य शानदार बगीचों, सुन्दर प्राकृतिक स्थलों, शानदार पर्वत इस राज्य की मूल्यवान संपदा है। इसकी ऐतिहासिकता इसकी गौरवगाथा का प्रमाण हैं। जम्मू राज्य, नये व प्राचीन पवित्र तथा विविध धार्मिक मंदिरों का केन्द्र है जिसकी दिव्यता ने जम्मू क्षेत्र निकट व दूरस्थ क्षेत्र के सभी तीर्थयात्रियों को आकर्षित किया है। जम्मू के प्राचीन मंदिर इसके गरिमामय प्राचीन इतिहास का वर्णन करते हैं। जम्मू क्षेत्र के प्राचीन मंदिर दो प्रकार के हैं– शिखर तथा पहाड़ी शैली। सर्वाधिक प्राचीन वास्तुकला के उदाहरण क्रिमिची मंदिर शिखर, उड़ीसा तथा मध्य भारत के मंदिरों के शिखर के समान बेलनुमा है। यह मंदिर भुवनेश्वर के लिंगराज तथा राजारानी मंदिर के शिखर शैली से मिलते हैं। शिखर शैली में यहाँ द्वार मंडप, मंडप व एक कमरा बनाया गया हे। ये सभी द्वारमंडप, मंडप व शैल (कमरा) पिरामिडीय आकार में निर्मित हैं।

जम्मू के प्राचीन मंदिरों में कश्मीरी और हिमांचल की वास्तुशैली का संगम दिखाई देता है। जम्मू के प्राचीन शैल मंदिरों में से ऐतिहासिक मंदिरों में क्रिमिची, बिलावर, बसौली, शुद्ध महादेव, बबोर तथा लाडखान कोटली है। इन प्राचीन मंदिरों में हमारी उत्तम शिल्पकला की प्रतीकात्मकता पायी जाती है। इन मंदिरों की वास्तुकला व मूर्तिकला हस्तशिल्पकला का उत्तम उदाहरण है।

निष्कर्ष

अतः अन्त में उपर्युक्त विवेचना के आधार पर यह कहा जा सकता हैं कि जम्मू के भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिवेश –जम्मू कश्मीर की पर्यटन संस्कृति को भारत का अभिन्न अंग बनाने के साथ विश्व की पर्यटन संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है। बर्फाच्छादित पर्वत श्रृंखलाएँ, पथरीली पहाड़ी भूमि ने जम्मू की कला पर एक अमिट प्रभाव डाला है। प्रकृति के मोहक स्वरूप का चित्रण जम्मू शैली के चित्रों को भारत के अन्य चित्रशैलियों से विशिष्टता प्रदान करता है। यहाँ की राजनैतिक उथल पुथल ने भी कला पर अनेक नवीन प्रभाव डाले, जिससे यह कला निरंतर विकसित होती गई, साथ ही मध्यकालीन आक्रामकों की विशेषता को सामंजस्य

की भावना ने इस प्रकार प्रभावित किया कि यहाँ एक समन्वयपरक संस्कृति का उदय हुआ। आज भी इतिहास संस्कृति और जम्मू की गणना भारत के शीर्षतम प्रान्तों में अग्रणी है। यहाँ का मानवीय जीवन और संस्कृति, आचरण और विचार के क्षेत्र में समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Bhattacharya, H, 1934, The Cultural Heritage of India, New Delhi.

Bhavnani, Enakshi, 1974, Folk & Tribal Designs of India, Taraporevala Pvt. Ltd, Bombay.

Kumar, Raj, Paintings And Lifestyles of Jammu Region (from 17th to 19th century AD), Kalpaz Publications, Vol.-2, Delhi-11005.

Sharma, Shiv Chander, 1997, Antiquities, History Culture and Shrines of Jammu.Vinod Publishers & Distributiors. Jammu.

गोस्वामी, ओम, 1985, डुग्गर दा सांस्कृतिक इतिहास, जे. एंड के. अकैटमी ऑफ आर्ट, कल्चर एडं लैंग्वेजिज, जम्मू।

नूतन, देशबन्धु डोगरा, डोगरी भाषा ते अदब दी तिहासक परचोल, (डोगरी ग्रन्थ), अरूणिमा प्रकाशम्, (ऊधमपुर), जम्मू।

पुरमण्डल वाहिनी, पं. मुकुन्द राम नागर, तारा प्रिंटर्ज, जून 2015, जम्मू।

Ancient Palace Ramnager, Archaeological Survey of India, 2009.

File:///F:/print/chapter%202.6/durga%20saptst;html.

File://IF:/print/Jammu%20@20ke@20rajvanse.html.

http://photos.jammuredefine.in/udhampur/histories.

https://dogrisansthajammu.justdial.com